7 जून, 2018

म्यूनिख सुरक्षा सम्मेलन 2018: एक विहंगावलोकन

*डॉ इन्द्राणी तालुकदार**

54 वां म्यूनिख सुरक्षा सम्मेलन इस वर्ष 16-18 फरवरी को म्यूनिख में हुआ। अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा नीति पर आयोजित इस वार्षिक कार्यक्रम में भाग लेने के लिए दुनिया भर से नेता और विशेषज्ञ आए थे।[i] सम्मेलन का आदर्श वाक्य था "टू द ब्रिंक एंड बैक?"

- एमएससी (म्यूनिख सुरक्षा सम्मेलन) 2018 के दौरान जिन विषयों पर चर्चा की गई, उनमें सुरक्षा नीति के क्षेत्र में भविष्य में यूरोपीय सहयोग की संभावनाएं, साथ ही उदारवादी अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था के प्रति लगातार बने हुए खतरे, संरक्षणवाद पर केन्द्रित वैश्विक आर्थिक व्यवस्था, लोकतंत्र पर प्रौद्योगिकी के प्रभाव, साहेल क्षेत्र और मध्य और पूर्वी यूरोप में सुरक्षा चुनौतियां, साथ ही साथ परमाणु हथियार नियंत्रण के मुद्दे और जिहादी आतंकवाद और खलीफत से उत्पन्न खतरों के विषय शामिल थें। चीन के वन बेल्ट वन रोड पहल पर आर्कटिक में शक्ति की राजनीति (पॉवर पॉलिटिक्स) पर बंद दरवाजा सत्रों के साथ-साथ नियम-आधारित अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था के मूल्यों और अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था पर प्रौद्योगिकी के प्रभाव पर चर्चा की गई। सम्मेलन के दौरान परमाणु सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए एमएससी के अध्यक्ष वोल्फगैंग इस्चिंगर को कार्नेगी कॉरपोरेशन और कार्नेगी एंडॉमेंट फॉर इंटरनेशनल पीस के साथ चौथे नून-लुगर पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- सम्मेलन के दौरान, एक रिपोर्ट पेश की गई थी जिसमें दुनिया भर में सामना की जा रही विभिन्न चुनौतियों पर बल दिया गया था और जो एक महत्वपूर्ण संघर्ष के कगार की ओर बढ़ रहे हैं।
- चुनौतियां बनी रहने के कारण, 2018 के विषय 2017 के विषयों के रूप-रेखा के समान ही हैं[ii]। यह पेपर प्रतिभागियों द्वारा प्रस्तुत किए गए मुख्य बिंदुओं पर प्रकाश डालता है।

मुख्य बिन्दुएँ थीं:

- एमएससी 2018 सम्मेलन का मुख्य फोकस यूरोप - इसकी ताकत, कमजोरियां, अवसर और चुनौतियों पर था।
- जर्मनी और फ्रांस के मंत्री ने यूरोप की सुरक्षा के प्रति जर्मनी और फ्रांस दोनों की इच्छा और जिम्मेदारी पर जोर दिया।
- यूरोपीय प्रतिभागियों का ध्यान ट्रांसअटलांटिक की तुलना में यूरोप पर अधिक था। जर्मनी ने यूरोप को एक मजबूत, स्वतंत्र और साधारण कारणों और प्रयोजनों से परिसीमित एकीकृत क्षेत्र के रूप में बताके एक कड़ा संदेश दिया। एक बड़ी शक्ति बनने के लिए, यूरोप के लिए आंतरिक संघर्षों को संबोधित करना आवश्यक है जो इस क्षेत्र में सामना किया जा रहा था।
- यूरोपीय आयोग के अध्यक्ष जीन-क्लाउड जुनकर[iii] ने कहा कि यूरोपीय संघ एक मजबूत संगठन बनाने के लिए, सदस्य देशों को सर्वसम्मति से निर्णय लेने पर काम करना चाहिए।
- जर्मनी और फ्रांस द्वारा यूरोप पर ध्यान केंद्रित करने की वजह से कमजोर होती ट्रांसअटलांटिक साझेदारी के किसी भी परिदृश्य को विखंडित करते हुए, नाटो के महासचिव जेन्स स्टोलटेनबर्ग[iv] ने कहा कि उत्तरी अमेरिका और यूरोप के बीच साझेदारी मजबूत हुई है जो क्षेत्र में अमेरिकी सैनिकों की तैनाती के माध्यम से देखी जाती है। उदाहरण के लिए, पॉज़्नान, पोलैंड में 6000 से अधिक अमेरिकी सैनिक तैनात हैं।[v] इसके अलावा, उन्होंने कहा कि रक्षा पर यूरोपीय संघ के प्रयासों को नाटो के विकल्प के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए। बल्कि यह पूरक है।
- तुर्की के प्रधान मंत्री बिन अली यलदरम[vi] ने कहा कि सीरिया में, नाटो सहयोगी एक दूसरे के खिलाफ लड़ रहे हैं जो पश्चिम एशिया की शांति और स्थिरता के अनुकूल नहीं है।
- ब्रिटेन की प्रधानमंत्री थेरेसा मे[vii] ने स्पष्ट किया कि हालांकि ब्रेक्सिट होगा, पर फिर भी ब्रिटेन गहरी और विशेष साझेदारी के माध्यम से यूरोपीय संघ के साथ निकट सहयोग बनाए रखेगा। ब्रिटेन द्वारा साझा किया गया संदेश यह था कि दोनों को कमजोर नहीं बनना चाहिए और ना ही अपने बीच प्रतिस्पर्धा रखनी चाहिए, परन्तु एक बार ब्रेक्सिट होने के बाद मजबूत बनना चाहिए। साझेदारी को मजबूत बनाने के लिए, दोनों पक्षों में स्वतंत्रता और स्वायत्तता को बनाए रखने की आवश्यकता है, यूरोपीय संघ के विस्तार की प्रक्रिया को बनाए रखने के लिए समर्थन और संबंधों के समस्त पहलुओं में समान साझेदारों के रूप में सहयोग बनाए रखने की आवश्यकता है।
- फ्रांस की रक्षा मंत्री फ्लोरेंस पैरी ने भी यूरोप द्वारा ना केवल संस्थानों का निर्माण करके बल्कि उनका संचालन करने के माध्यम से अपनी सुरक्षा और रक्षा की जिम्मेदारियां लेने के बारे में कहा। उन्होंने यूरोप पर एक क्षेत्र के रूप में तथा विश्व व्यवस्था में शांति और स्थिरता लाने के लिए इसके योगदान पर बल देते हुए कहा कि "यूरोप का होना ना केवल अच्छा है, बल्कि बहुत जरूरी है"।

- रूस के विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव ने देश और यूरोप के बीच की चुनौतियों के बारे में बात की और सुझाव दिया कि यूरोपीय संघ स्वतंत्र नीति-निर्माण को अपनाए। रूस आधुनिक समय की चुनौतियों के लिए प्रभावी समाधान खोजने के लिए पारस्परिक सम्मान और हितों के संतुलन के आधार पर यूरोपीय संघ के साथ एक समान भागीदारी के लिए तैयार है। यह इन सिद्धांतों के आधार पर अमेरिका और अन्य सभी देशों के साथ अपने संबंधों को बढ़ावा देने के लिए भी तैयार है।
- अमेरिकी राष्ट्रपति के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार, लेफ्टिनेंट जनरल, हर्बर्ट रेमंड मैकमास्टर[viii] ने दुष्ट शासनों के कारण दुनिया भर में सामना की जा रही भू-राजनीतिक चुनौतियों के बारे में बात की, जिनके पास सामूहिक विनाश के हथियार हैं, संशोधनवादी शक्तियों की गतिविधियों और जिहाद के प्रसार का खतरा बढ़ रहा है। इन समस्याओं का समाधान करने के लिए और विश्व व्यवस्था को ढ़हने से बचाने के लिए, उन्होंने सुझाव दिया कि अमेरिका, उसके सहयोगियों और साझेदारों को एक-साथ मिलकर एक समूह बनाना चाहिए और सामूहिक विनाश के हथियारों का अप्रसारण सुनिश्चित करके और उनके उपयोग को रोक के; जिहादी आतंकवादी संगठनों को हराकर और शांति तथा समृद्धि के लिए अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों को मजबूत बनाकर इन चुनौतियों से लड़ने के लिए सामूहिक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।
- यूक्रेन ने कहा कि रूस विश्व व्यवस्था के लिए एक संभावित खतरा है। यूक्रेनी राष्ट्रपति के अनुसार, 10 फरवरी 2007 को 43 वें एमएससी में रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के भाषण ने विश्व की उदारवादी व्यवस्था को अस्थिर बनाने की नींव रखी थी। यूरोप और विश्व का एकजुट होकर रूस का विरोध करना महत्वपूर्ण है। यूक्रेनी राष्ट्रपति पीटर पोरोशेंको ने यूरोपीय संघ का झंडा उठाकर अप्रत्यक्ष रूप से यह सुझाया कि वह यूक्रेन यूरोपीय संघ का एक सदस्य है। उन्होंने कीव को यूरोप की 'तलवार और ढाल' कह कर, यूक्रेन को यूरोपीय व्यवस्था और सुरक्षा रूपरेखा का एक महत्वपूर्ण युद्धक्षेत्र बताया। उन्होंने यूरोपीय संघ और नाटो के विस्तार की प्रक्रिया को प्रोत्साहित किया।
- यूरोपीय आयोग के अध्यक्ष जीन-क्लाउड जुनकर[ix] ने कहा कि पश्चिमी बाल्कन देश 2019 तक यूरोपीय संघ के विस्तार की प्रक्रिया के लिए तैयार नहीं हैं।
- जर्मन विदेश मंत्री, सिग्मर गेब्रियल[x] ने कहा कि उदारवादी विश्व व्यवस्था बनाए रखना महत्वपूर्ण है अन्यथा अन्य गैर-पश्चिमी देशों की व्यवस्था की दृष्टि पश्चिमी देशों के लिए असुविधा का कारण बनेगी।
- नाटो महासचिव जेन्स स्टोलटेनबर्ग[xi] ने भी परमाणु हथियारों के प्रसार, रूस द्वारा आईएनएफ संधि (मध्यम दूरी परमाणु शक्ति संधि) के उल्लंघन और उत्तर कोरिया के परमाणु परीक्षणों सहित परमाणु खतरों के पुनरुत्थान के बारे में बात की। एस्टोनिया गणराज्य की राष्ट्रपति केर्स्ती कलजुलैद[xii] ने बल देते हुए कहा कि ये खतरे गैर-परमाणु राज्यों के लिए अप्रत्याशित वातावरण का कारण बन गए हैं। उन्होंने यह भी कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के माध्यम से परमाणु प्रणालियों का उन्नयन भविष्य के लिए खतरा है। एआई पर आधारित एक परमाणु संवर्धन प्रणाली या परमाणु हथियार विकास प्रणाली की रचना एक तबाही के समान होगी।

- परमाणु युद्ध से बचने के लिए, फू यिंग (चीनी जनवादी गणराज्य संसद, राष्ट्रीय लोक कांग्रेस के विदेश मामले समिति की अध्यक्षा; म्यूनिख सुरक्षा सम्मेलन के सलाहकार परिषद की सदस्या) ने कहा कि P5 को वैश्विक रणनीतिक स्थिरता बनाए रखना; अप्रसार शासन को सुरक्षित रखना और परमाणु निरस्त्रीकरण जारी रखना चाहिए। वैश्विक सुशासन में सुधार किया जाना आवश्यक है। अमेरिका, उसके सहयोगियों और गैर-अमेरिकी सहयोगियों के बीच विश्वास बनाना महत्वपूर्ण है। कोरियाई प्रायद्वीप के मुद्दे का समाधान होना महत्वपूर्ण है। हर ओर से और अधिक प्रयास किए जाने की आवश्यकता है, विशेष रूप से अमेरिका और उत्तर कोरिया की ओर से। कोरियाई समस्या का मूल कारण 27 जुलाई, 1953 को हस्ताक्षरित कोरियाई युद्धविराम समझौते में निहित है।
- चू मी ए (कोरिया के मिंजु दल की अध्यक्षा; कोरिया गणराज्य संसद, राष्ट्रीय विधानसभा के विदेशी संबंधों और एकीकरण समिति की सदस्या) ने कहा कि दक्षिण कोरिया शीतकालीन ओलंपिक के पश्चात उत्तर कोरिया के साथ सकारात्मक जुड़ाव की दिशा में गंभीर कदम उठाएगा। (27 अप्रैल की पनमुनजोम घोषणा खतरे को दूर करने की दिशा में दोनों कोरियाई नेताओं द्वारा उठाए गए विभिन्न कूटनीतिक कदमों का परिणाम है)।
- "परमाणु सुरक्षा: (हथियारों के) नियंत्रण से बाहर?" पर एक पैनल चर्चा के दौरान रूस और अमेरिका के प्रतिनिधियों ने अपने देश की परमाणु स्थिति के बारे में खुलकर बात की। परमाणु के मोर्चे पर रूस और अमेरिका के बीच पुनः जन्म लेती अविश्वास भी एक गंभीर मुद्दा है। रूस के प्रतिनिधि, सर्गेई किसलयक (रूसी संघ के संघ परिषद् के विदेश मामले समिति के प्रथम उपाध्यक्ष; संयुक्त राज्य अमेरिका में रूसी संघ के पूर्व राजदूत) ने कहा कि रूस का परमाणु सिद्धांत नहीं बदला है। दो स्थितियों के तहत, यह परमाणु हथियारों का उपयोग करेगा: पहला, जब रूस पर परमाणु या सामूहिक विनाश के हथियारों से हमला होगा और दूसरा, अगर कोई संघर्ष एक गंभीर स्थिति में पहुँच जाता है जहां राष्ट्र के अस्तित्व का सवाल हो। रूस का रुख पारम्परिक सुरक्षा का रुख है, जिसे अमेरिका नकारने की कोशिश कर रहा है। रूस के सभी परमाणु कार्यक्रम आईएनएफ संधि (मध्यम दूरी परमाणु शक्ति संधि) के अनुरूप हैं और यह अमेरिका के साथ बातचीत करने के लिए तैयार है।
- इस बीच, अमेरिकी प्रतिनिधि जॉन सुलिवन (संयुक्त राज्य अमेरिका के राज्य के उप सचिव) ने कहा कि अमेरिका परमाणु परीक्षण के प्रतिबन्धों का पालन करता है।[xiii] अमेरिका के परमाणु रुख में जो नई बात सामने आई है वो है उन सुरक्षा स्थितियों का आंकलन करना जिनमें बदलाव आए हैं। इस मूल्यांकन की प्रतिक्रिया परमाणु ट्रायड को अद्यतन करना है। अमेरिका नए हथियार नहीं ला रहा है। रूस जिन हथियारों को लेकर अमेरिका पर आरोप लगाता है, जैसे कि लो यील्ड सबमरीन बैलिस्टिक मिसाइल, ये मिसाइल दशकों से अमेरिकी कार्यक्रम का हिस्सा रही हैं। सी-लॉन्च क्रूज मिसाइलें, रूस और चीन समेत अन्य देशों के हथियार और परमाणु सिद्धांत के प्रति अमेरिका की जवाबी कार्रवाई के लिए है[xiv], जो 'तीव्र बनाने, तीव्रता को कम करने' की कार्रवाई के लिए कम दूरी की मध्यवर्ती सीमा और कम उत्पादन वाले हथियारों के उपयोग पर आधारित हैं। अमेरिका के खिलाफ गैर-परमाणु सामरिक हथियार का उपयोग होने पर, उसका जवाब देने के लिए अमेरिका परमाणु हथियारों का इस्तेमाल करेगा। यह निरोध की रणनीति है। अमेरिका नए परमाणु हथियारों का निर्माण नहीं करेगा और नई शुरुआत संधि के प्रतिबंधों को बनाए

रखेगा लेकिन ट्रायड को अपडेट और आधुनिक भी बनाएगा।

- अमेरिका और रूस के मध्य परमाणु हथियारों के नियंत्रण को लेकर हुई चर्चाओं से परमाणु निरस्त्रीकरण के अनुपालन के विषय में इन दोनों देशों द्वारा एक-दूसरे पर दोषारोपण का खेल स्पष्ट नज़र आ रहा था।
- साइबर सुरक्षा पर, रूस के प्रतिनिधि, सर्गेई किसलयक ने कहा कि यह दुनिया के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती है और मुख्य खतरा अमेरिका से है न कि रूस से। रूस पर अमेरिका और पश्चिमी देशों के चुनाव में दखल देने के आरोप काल्पनिक हैं। रूस ने अमेरिका के साथ बातचीत का द्वार खुला रखा है और अमेरिका को यह दूरी कम करने के लिए पहल करनी होगी क्योंकि दोनों देशों के बीच की खाई बहुत गहरी हो चुकी है।
- ईरान परमाणु समझौते पर, अमेरिका ने कहा कि यह एक त्रुटिपूर्ण सौदा है क्योंकि इसमें बैलिस्टिक मिसाइलों पर नियंत्रण के बारे में नहीं कहा गया है जो इस क्षेत्र में सुरक्षा के लिए खतरा है। तेहरान पर आतंकवादी गतिविधियों के लिए जेसीपीओए (संयुक्त विस्तृत कार्य योजना) निधि का दुरुपयोग करने का आरोप है।
- वैश्विक आर्थिक व्यवस्था पर पैनल चर्चा के दौरान,[xv] वैश्विक स्तर पर सकारात्मक आर्थिक विकास पर बात हुई। दुनिया में 3.9 प्रतिशत की विकास दर देखी जा रही है और 2019 में ऐसी ही बने रहने का अनुमान है। हालांकि, इसके साथ ही, पैनलिस्ट ने जिन आगामी चुनौतियों की ओर इशारा किया, वे हैं "उच्च मुद्रास्फीति दर, ब्याज दरों में वृद्धि[xvi], कुछ निश्चित परिसंपत्तियों की मुद्रास्फीति, वैश्वीकरण में समावेशन, उन लोगों द्वारा स्वामित्व स्थापित किया जाना, जिन्होंने वैश्विक आर्थिक प्रणाली[xvii] का निर्माण किया है, गरीबी उन्मूलन, असमानता, अत्यधिक लाभ उठाना, पेंशन, संरक्षणवाद आदि। उनके अनुसार, इन समस्याओं से 2008 की तरह ही एक और वित्तीय संकट पैदा हो जाएगा। विकास दर में वृद्धि होने के बावजूद आय की कमी और ऋण में वृद्धि होगी।
- वैश्विक आर्थिक व्यवस्था की पैनल ने कहा कि भू-राजनीतिक चुनौतियों में वैश्विक आर्थिक विकास को पटरी से उतारने की शक्ति है।
- फ्रांस टिम्मरमन्स (यूरोपीय आयोग के प्रथम उपाध्यक्ष और बेहतर विनियमन के आयुक्त) ने कहा कि यूरोप को संरक्षणवाद नहीं अपनाना चाहिए। दुनिया को 'सभी के लिए लाभ' की स्थिति में वापस आ जाना चाहिए।[xviii]
- वैश्विक आर्थिक व्यवस्था की पैनल ने यह भी कहा कि संभावित भू-राजनीतिक चुनौतियों में पश्चिम एशिया, दक्षिण चीन सागर और कोरियाई प्रायद्वीप के साथ-साथ गैर-अमेरिकी कार्यकर्ता और साइबर हमलें शामिल हैं जो वैश्विक अर्थव्यवस्था और अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था के लिए खतरा है।
- चीन की बढ़ती वैश्विक नेतृत्व, ओबीओआर (वन बेल्ट वन रोड) पहल[xix], इसकी प्रौद्योगिकी और अभिनव मुद्दें[xx] कुछ ऐसे महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं जिन पर ध्यान दिया और विचार किया जाना चाहिए। जर्मन विदेश मंत्री, सिग्मर गेब्रियल ने कहा कि ओबीओआर "पूरे विश्व को चीनी हित में आकार देने के लिए एक विस्तृत प्रणाली स्थापित करने का एक प्रयास है। यह अब अर्थव्यवस्था के बारे में नहीं है, बल्कि पश्चिमी विस्तृत प्रणाली के एक विकल्प के तौर पर चीनीयों द्वारा स्थापित एक विस्तृत प्रणाली है, जो स्वतंत्रता, लोकतंत्र और व्यक्तिगत मानव अधिकारों पर आधारित नहीं है।"

- कतर राज्य के अमीर शेख तमीम बिन हमद अल थानी[xxi] ने पश्चिम एशिया पर कहा कि इस क्षेत्र में अस्थिरता और आतंकवाद व्यापने के कारण हैं सामाजिक और आर्थिक प्रगति में कमी; बढ़ता सांप्रदायिक भेदभाव; क्षेत्रीय प्रतिद्वंद्विता और बाहरी शक्तियों से मिलने वाले सहयोग में बदलाव होना। उन्होंने दो और कारण बताए, जो हैं लापरवाही और साझा सुरक्षा प्रदान करने की कोई रूपरेखा ना होना। इनके अलावा, प्रमुख क्षेत्रीय खिलाड़ियों के बीच क्षेत्रीय प्रतिद्वंद्विता और क्षेत्र में ठोस शासन सिद्धांतों और कानून के शासन की कमी ने भी चुनौतियों बढ़ाई हैं। पश्चिम एशिया में स्थिरता लाने के लिए, उन्होंने सह-अस्तित्व की एक समावेशी आधार रेखा पर सहमत होने की आवश्यकता का सुझाव दिया, जो बाध्यकारी मध्यस्थता तंत्र द्वारा समर्थित, और यूरोपीय संघ के प्रतिमान जैसे क्षेत्र की सामूहिक निकाय द्वारा लागू किया जाना चाहिए।
- ईरानी विदेश मंत्री मोहम्मद जवाद ज़रीफ़[xxii] ने कहा कि आतंकवाद को हारने के लिए नफ़रत और बहिष्कार की विचारधारा को पराजित करने की आवश्यकता है। जब तक इस कारक को संबोधित नहीं किया जाता, तब तक भले ही आईएसआईएस जैसे कितने ही आतंकवादी समूहों का खात्मा क्यों ना कर लिया जाए, पर फिर भी आतंकवाद पनपता ही रहेगा।
- पाकिस्तानी सेनाध्यक्ष, जनरल क़मर जावेद बाजवा[xxiii] के अनुसार, जिहादवाद एक ऐसी स्वतंत्र उदारवादी दुनिया का परिणाम है जहाँ पश्चिम में युवाओं को कट्टरपंथी बनाया गया था। इसे हराने के लिए, पाकिस्तान ने कुछ उपाय अपनाए हैं जैसे कि सैन्य कार्रवाई करना; आतंकवादियों के आख्यान को विफल करने के लिए जनमत तैयार करना; राष्ट्रीय कार्य योजना तैयार करना, जिसका उद्देश्य आतंकवाद से लड़ना और धीरे-धीरे उग्रवाद को जड़ से उखाड़ना है और 2017 में की गई ऑपरेशन रद्द-उल-फसाद, जिसका विशेष उद्देश्य था - देश में शेष बचे आतंकवादी उपस्थिति का पता लगाने और नष्ट करने के लिए गतिज (कार्रवाई करने) और कानून प्रवर्तन बढ़ाने के कार्यों को लक्षित करना; राष्ट्रीय कार्य योजना का समर्थन करने के लिए समझौतें करना, जिससे बेहतर अभियोजन, नीति निर्माण, शिक्षा सुधार और आतंक को मिलते वित्तपोषण और नफरतवादी भाषण का शमन करना और जिहाद और खलीफत जैसे शब्दों के दुरुपयोग सहित आतंकवादी विचारधारा की साख घटाना। पाकिस्तान में, जिहादवाद या आतंकवाद एक वास्तविकता है और समाज में प्रचलित है। आतंकवादी समूहों को हराने के लिए पाकिस्तानी सेना के प्रयासों के बावजूद, वे अब भी सक्रिय हैं और कई स्लीपर सेल कुछ प्रमुख कस्बों और शहरों के अलावा पहाड़ों, सीमावर्ती शहरों और 54 शरणार्थी शिविरों में रह रहे हैं।
- जनरल क़मर जावेद बाजवा[xxiv] ने अफगानिस्तान पर कहा कि अफगानिस्तान की गतिरोध का कारण 2003 के बाद देश से संसाधनों को वापस लेना है। अफगानिस्तान का गतिरोध केवल हक्कानी नेटवर्क या टीटीए के कारण ही नहीं है बल्कि एक गलत रणनीति अपनाने की वजह से भी है। अफगानिस्तान में अब भी हक्कानी नेटवर्क या टीटीए के लिए सुरक्षित ठिकाने सक्रिय हैं। इसलिए, अफगानिस्तान में शांति प्राप्त करने के लिए, पाकिस्तान गतिज दृष्टिकोण पर आधारित नई अमेरिकी रणनीति का समर्थन करता है। गतिज दृष्टिकोण, जिसके बारे में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने 21 अगस्त 2017 को घोषणा की थी, का अर्थ होगा कि अफगानिस्तान में सक्रिय आतंकवादी समूहों का मुकाबला करने के लिए सैन्य बल का उपयोग करना। हालांकि यह ट्रम्प की पूर्ववर्ती नीति से कोई अलग नहीं है, लेकिन ये नई रणनीति पूर्व

राष्ट्रपति बराक ओबामा के समय-आधारित दृष्टिकोण के बजाय स्थितियों पर आधारित है। राष्ट्रपति ट्रम्प के दृष्टिकोण के नतीजे आने बाकी हैं।

- संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस[xxv] ने कहा कि दो दिवसीय सम्मेलन के दौरान चर्चा की गई सभी चुनौतियों के अलावा, साइबर युद्ध और वैश्विक जलवायु परिवर्तन के खतरों को भी तत्काल संबोधित करने की आवश्यकता है।

एमएससी में प्रतिनिधियों द्वारा साझा की गई कुछ संस्तुतियां/सुझाव निम्नानुसार हैं:

एक मजबूत और एकीकृत यूरोप बनाने की दिशा में

- जर्मनी की रक्षा मंत्री उर्सुला वॉन डेर लेयेन ने कहा कि यूरोप को एक नेटवर्क सुरक्षा संधि की आवश्यकता है। जर्मनी की नई गठबंधन समझौता भी इसी तर्क पर आधारित है: देश ने एक नया, अनोखा कदम उठाया है। यह तय किया है कि अगले चार वर्षों में, अतिरिक्त बजटीय संसाधनों को दो क्षेत्रों पर केंद्रित किया जाएगा: रक्षा और विकास, जिसे जर्मन रक्षा मंत्री ने जर्मनी का नाटो लक्ष्य और ओडीए (आधिकारिक विकास सहायता) कोटा के रूप में 1: 1 के अनुपात में करार दिया है। इसके पीछे तर्क यह है कि निकटवर्ती भविष्य में इससे दोनों क्षेत्रों के लिए वित्तीय संसाधनों में महत्वपूर्ण वास्तविक वृद्धि को बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने वित्तीय संसाधनों की वास्तविक वृद्धि को आर्थिक उत्पादन में वृद्धि का कारण बताया। इन समझौतों के साथ, जर्मनी ने पहली बार एक ठोस "नेटवर्क सुरक्षा संधि" पर बाध्यकारी सहमति व्यक्त की है। [xxvi]
- एक स्वतंत्र, सुरक्षित, समृद्ध और सामाजिक रूप से निष्पक्ष यूरोप का भविष्य बनाने पर, जर्मन विदेश मंत्री श्री गेब्रियल ने निम्नलिखित का प्रस्ताव दिया:
  - यूरोपीय संघ को यूरोपीय मुद्रा से ही नहीं बल्कि यूरोपीय मानदंडों द्वारा पूर्वी यूरोप से लेकर मध्य एशिया में और अफ्रीका (विकास सहायकता से आगे) में भी अवसंरचनाओं के विकास को बढ़ावा देने के लिए अपनी अलग पहल शुरू करनी चाहिए।
  - मिन्स्क समझौते के माध्यम से यूक्रेनी संकट सहित यूरोप और रूस के बीच तनाव का समाधान करना।
- फ्रांस के प्रधान मंत्री एडोआर्ड फ़िलिपे[xxvii] ने सुझाव दिया कि यूरोपीय संघ को प्रवासन समेत अपने सुरक्षा जोखिमों के "मूल कारणों" को संबोधित करना चाहिए।
- ब्रिटेन की प्रधानमंत्री मिस मे ने ब्रेक्सिट के बाद यूके और यूरोपीय संघ के बीच एक नई सुरक्षा साझेदारी बनाने का सुझाव दिया।
- नाटो ने सुझाव दिया कि यूरोप को सुरक्षित रखने के लिए, यूरोपीय संघ की रक्षा नीतियों को ट्रांसअटलांटिक साझेदारी के अंतर्गत समाविष्ट किया जाना चाहिए।

दूसरों के लिए एक प्रतिमान के रूप में यूरोपीय संघ:

चर्चाओं के दौरान, कतर और दक्षिण कोरिया ने यूरोपीय संघ को एक सफल प्रतिमान का दर्जा दिया।

- शेख अल-थानी ने सुझाव दिया कि अरब देशों को यूरोपीय संघ को एक प्रतिमान के रूप में अपनाना चाहिए क्योंकि यह क्षेत्रीय प्रशासन और विवादों के शांतिपूर्ण मध्यस्थता के लिए एक रूप-रेखा प्रदान करता है।
- मिस मिंजु ने यूरोपीय संघ की एकता का उदाहरण देते हुए कहा कि दक्षिण कोरिया शांति और स्थिरता के एक प्रतिमान के माध्यम से शांति और स्थिरता बनाने की उम्मीद करता है जिसका नाम है "अर्थव्यवस्था का नया मानचित्र"। दोनों कोरियाई देशों के बीच शांतिपूर्ण समाधान के लिए आपस में भरोसा बनाना एक महत्वपूर्ण घटक है।

पश्चिम एशिया के पुनर्निर्माण पर

- ईरान के विदेश मंत्री श्री ज़रीफ़ ने सुझाव दिया कि फारस की खाड़ी क्षेत्र में समावेशी शांति और सुरक्षा लाने के लिए सामूहिक प्रयास के आधार पर एक 'नई' क्षत्रीय रूपरेखा बनाने की आवश्यकता है। इसके लिए कुछ सुझाव थे:
  - प्रत्येक देश के आपसी हित को पहचानना और इस क्षेत्र में विषम प्रवृत्तियों को पराजित करना महत्वपूर्ण है।
  - सामूहिक सुरक्षा और गठबंधन बनाने से लेकर समावेशी अवधारणाओं की आवश्यकता, जैसे कि सुरक्षा नेटवर्किंग[xxviii] , जो हितों के विचलन से लेकर सत्ता और आकार की असमानताओं तक के मुद्दों को संबोधित कर सकता है।
  - हेलसिंकी प्रक्रिया की तरह, फारस की खाड़ी की भविष्य की सुरक्षा रूपरेखा "टिकट सिद्धांतों" और "सीबीएम बास्केट"[xxix] पर आधारित होनी चाहिए।
  - फारस की खाड़ी में भरोसा बनाने के उपाय: संयुक्त सैन्य दौरों से लेकर सैन्य अभ्यास की पूर्व सूचना; और हथियारों की खरीद में पारदर्शिता के उपायों से लेकर सैन्य व्यय कम करना; जो सभी अंततः एक क्षेत्रीय गैर-आक्रामकता संधि का कारण बन सकते हैं।
  - पर्यटन, संयुक्त निवेश, या यहां तक कि परमाणु सुरक्षा से लेकर प्रदूषण से लेकर आपदा प्रबंधन आदि जैसे मुद्दों पर संयुक्त कार्य बलों को बढ़ावा देना कुछ परियोजनाएं हो सकती हैं जो देशों के बीच लागू किए जा सकते हैं ताकि इस क्षेत्र के देश एकजुट हो सकें।

अफगानिस्तान, आतंकवाद, परमाणु खतरा और अन्य खतरों पर

- अफगानिस्तान पर, पाकिस्तान के जनरल बाजवा ने कहा कि नाटो और उसके सहयोगियों की ओर से इस गतिरोध के कारणों का पता लगाने के लिए एक लेखा-परीक्षा और आत्मनिरीक्षण करने का एक सामूहिक प्रयास किया जाना चाहिए।
- जिहादवाद/ आतंकवाद को पराजित करने पर, बाजवा ने सुझाव दिया कि आतंकवादी के आख्यानों का

मुकाबला करने के लिए एक मजबूत और बेहतर आख्यान की आवश्यकता है। साथ ही, देशों के बीच सहयोग और विश्वास होना महत्वपूर्ण है।

- परमाणु खतरों पर, "परमाणु सुरक्षा: (हथियारों के) नियंत्रण से बाहर?" के पैनेलिस्ट ने सुझाव दिया कि इस समय एआई से जुड़े परमाणु हथियारों और साइबर सुरक्षा के खतरों के नियंत्रण पर एक स्पष्ट चर्चा करना आवश्यक है। हथियारों का नियंत्रण ऐसा एक अन्य मुद्दा है जिस पर अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को तत्काल विचार करने की आवश्यकता है।
- अन्य खतरों पर, संयुक्त राष्ट्र महासचिव श्री गुटेरेस ने कहा कि बहुपक्षवाद साइबर युद्ध और वैश्विक जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याओं का समाधान है।

म्यूनिख सुरक्षा सम्मेलन के अध्यक्ष, राजदूत, वोल्फगैंग इस्चिंगर[xxx] ने म्यूनिख सुरक्षा सम्मेलन का समापन किया। उन्होंने कहा कि उन्हें लगा कि दुनिया इस सम्मेलन के विषय "टू द ब्रिंक एंड बैक?" से प्रश्न चिन्ह हटा सकेगी, लेकिन उन्हें इस बात का पूरा यकीन नहीं था कि दुनिया ऐसा कर सकती है। उन्होंने कहा कि वैश्विक सुरक्षा मुद्दों की एक श्रृंखला, जैसे कि पश्चिम एशिया में संघर्ष, कोरियाई प्रायद्वीप का परमाणु मुद्दा, ईरान, सीरिया, ट्रांस-अटलांटिक संबंध, गहन रक्षा सहयोग के लिए यूरोपीय संघ के प्रयास, यूरोप के साथ रूस के समस्याग्रस्त संबंध, वैश्विक आर्थिक व्यवस्था, चीन की ओबीओआर, ब्रेक्सिट के बाद यूरोपीय संघ और ब्रिटेन के बीच एक नई सुरक्षा संधि आदि पर स्वतंत्र और स्पष्ट रूप से चर्चा हुई। इसलिए, 'आगे अब भी बहुत ज़्यादा काम करना बाकी है'। उन्होंने सुझाव दिया कि अगला एमएससी 2019 आयोजित होने से पहले इस सम्मेलन के दौरान जो सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं, उन पर काम करने की आवश्यकता है।

** डॉ इन्द्रानी तालुकदार, रिसर्च फेलो, इंडियन काउंसिल ऑफ़ वर्ल्ड अफेयर्स, नई दिल्ली।*

अस्वीकरण: इसमें व्यक्त किया गया दृष्टिकोण अनुसन्धानकर्ता का दृष्टिकोण है और ना कि परिषद का।

अंतिम टिप्पणियाँ

[i]एमएससी ने एक संकीर्ण ट्रांसअटलांटिक सुरक्षा रूपरेखा को विस्तृत कर क्षेत्रीय अस्थिरता, ग्लोबल वार्मिंग, साइबर युद्ध, उन्नत तकनीक आदि असंख्य वैश्विक सुरक्षा खतरों और आतंकवाद के लिए समावेशी बनाया है।

[ii]2017 में जिन विषयों पर चर्चा की गई, वो थे एक एकजुट या एक विभाजित यूरोपीय संघ, पश्चिम का भविष्य, नाटो की प्रासंगिकता, पूर्वी एशिया पर ध्यान देते हुए एशिया-प्रशांत और कोरियाई प्रायद्वीप, यूरेशिया की त्रुटी रेखा, फ्रांस-जर्मन दृष्टिकोण, सीरिया का संकट, कट्टरता और आतंकवाद, और जलवायु और स्वास्थ्य सुरक्षा चुनौतियां।

[iii]"54 वें म्यूनिख सुरक्षा सम्मेलन के अवसर पर अध्यक्ष जीन-क्लाउड जुनकर का भाषण", *यूरोपीय आयोग*, फरवरी 17, 2018. http://europa.eu/rapid/press-release_SPEECH-18-841_de.htm (अप्रैल 2, 2018 को एक्सेस किया गया).

[iv] ***"म्यूनिख सुरक्षा सम्मेलन के आरंभिक सत्र में नाटो महासचिव जेन्स स्टोलटेनबर्ग का संबोधन"***, **नाटो**, ***फरवरी 16, 2018.***
*https://www.nato.int/cps/en/natohq/opinions_152209.htm?selectedLocale=en (**मार्च** 23, 2018 **को एक्सेस किया गया**).*

[v]**चार्लसी पंज़िनो**, "**इस वसंत में 100 से अधिक सैनिकों को यूरोप में तैनात किया जाएगा**", ***आर्मी टाइम्स*, जनवरी** 17, 2018. https://www.armytimes.com/news/your-army/2018/01/17/more-than-100-soldiers-will-deploy-to-europe-this-spring/ (28, 2018 **को एक्सेस किया गया**).

[vi]"प्रधान मंत्री यलदरम ने 54 वें अंतर्राष्ट्रीय म्यूनिख सम्मेलन के मुख्य सत्र में प्रतिभागियों को संबोधित किया", *तुर्की गणराज्य के प्रधान मंत्री*, फरवरी 18, 2018. http://www.basbakanlik.gov.tr/Forms/_Article/pg_Article.aspx?Id=fab70375-3337-46a4-8f1b-67d623a89cef (अप्रैल 4, 2018 को देखा गया).

[vii]"**म्यूनिख सुरक्षा सम्मेलन में प्रधान मंत्री का संबोधन**: 17 **फरवरी** 2018", ***ब्रिटेन सरकार*, फरवरी** 17, 2018. https://www.gov.uk/government/speeches/pm-speech-at-munich-security-conference-17-february-2018 (**अप्रैल** 2, 2018 **को एक्सेस किया गया**).

[viii]"**म्यूनिख सुरक्षा सम्मेलन में एलटीजी एच.आर मैकमास्टर का संबोधन**", ***वाइट हाउस*, फरवरी** 22, 2018. https://www.whitehouse.gov/briefings-statements/remarks-ltg-h-r-mcmaster-munich-security-conference/ (**मार्च** 4, 2018 **को एक्सेस किया गया**).

[ix]"54 वें सुरक्षा सम्मेलन के अवसर पर अध्यक्ष जीन-क्लाउड जुनकर का संबोधन", *यूरोपीय आयोग*, op.cit.

[x]"**म्यूनिख सुरक्षा सम्मेलन में विदेश मंत्री सिग्मर का संबोधन**", ***विदेश मंत्रालय*, फरवरी** 17, 2018. https://www.auswaertiges-amt.de/de/newsroom/rede-muenchner-sicherheitskonferenz/1599848 **(मार्च** 12, 2018 **को एक्सेस किया गया)**

[xi] ***"म्यूनिख सुरक्षा सम्मेलन के आरंभिक सत्र में नाटो के सचिव जनरल जेन्स स्टोलटेनबर्ग का संबोधन"***, **नाटो**, *op.cit.*

[xii]"परमाणु सुरक्षा: (हथियारों के) नियंत्रण से बाहर?" पर इस पैनल चर्चा के प्रतिनिधि केर्स्ती खलजुलैद, एस्टोनिया की राष्ट्रपति, फू यिंग (चीनी जनवादी गणराज्य के संसद, राष्ट्रीय लोक कांग्रेस के विदेश मामले समिति की अध्यक्षा; म्यूनिख सुरक्षा सम्मेलन के सलाहकार परिषद की सदस्या), चू मी ए (कोरिया के मिंजु दल की अध्यक्षा; कोरिया गणराज्य की संसद, राष्ट्रीय विधानसभा के विदेशी संबंधों और एकीकरण समिति की सदस्या), सर्गेई किसलयक (रूसी संघ के संघ परिषद् के विदेश मामले समिति के प्रथम उपाध्यक्ष; संयुक्त राज्य अमेरिका में रूसी संघ के पूर्व राजदूत), और जॉन सुलिवन (संयुक्त राज्य अमेरिका के राज्य के उप सचिव) थे। "परमाणु सुरक्षा: (हथियारों के) नियंत्रण से बाहर?" *म्यूनिख सुरक्षा सम्मेलन 2018 विडियो*, फरवरी 16, 2018. https://www.securityconference.de/en/media-library/munich-security-conference-2018/video/panel-discussion-nuclear-security-out-of-arms-control/ (मार्च 31, 2018).

[xiii]अमेरिका परमाणु परीक्षण को रोके रखने के प्रति कटिबद्ध है।

[xiv]मिस यिंग ने श्री सुलिवन को बताया कि अमेरिका को चीन से डरना नहीं चाहिए क्योंकि बीजिंग के पास अमेरिका को धमकी देने का कोई कारण नहीं है। चीन को अमेरिका से आर्थिक अनुलाभ मिलता है। उन्होंने दृढ़ता से कहा कि चीन या किसी अन्य देश पर अमेरिका का परमाणु रुख बदलने का आरोप लगाना बंद करें। उनके अनुसार, खतरे के आंकलन और अविश्वास को दूर करने की चीन, अमेरिका और रूस के बीच बातचीत होने की आवश्यकता है।

[xv]पैनल में अर्नेस्टो ज़ेडिलो (संयुक्त मैक्सिकन राज्यों के पूर्व राष्ट्रपति; द एल्डर्स फाउंडेशन के सदस्य; परिचय), क्रिस्टीन लेगार्ड (प्रबंध निदेशक, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष) और ओलिवर बैटे (मुख्य कार्यकारी अधिकारी, एसई गठबंधन) शामिल थे। "वैश्विक आर्थिक व्यवस्था", *म्यूनिख सुरक्षा सम्मेलन 2018 विडियो,* फरवरी 16, 2018. https://www.securityconference.de/en/media-library/munich-security-conference-2018/video/fireside-chat-the-global-economic-order/ (अप्रैल 10, 2018 को एक्सेस किया गया).

[xvi]पैनल ने विशेष रूप से बढ़ी हुई दर के पीछे की चुनौती पर चर्चा नहीं की। हालांकि, उन्होंने 'गलत आर्थिक उद्देश्यों और व्यापक अर्थव्यवस्था असंतुलन को सही करने के लिए साधनों' पर आधारित व्यापक आर्थिक और मौद्रिक नीति के माध्यम से जोखिमों के बारे में बात की। ये उन विदेशी व्यापार नीतियों के संबंध में था जो शक्तिशाली अर्थव्यवस्था हासिल करना चाहते हैं। मध्यम अवधि की नकारात्मक जोखिमों में से एक अन्य जोखिम पर चर्चा की गई जो वित्तीय कमजोरियां हैं, जो अत्यधिक लाभ उठाने के कारण प्रणाली में मौजूद हैं और जो वर्षों से संचयित होती आ रही है। आईबिड. संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट में, इसमें वर्ष 2018 में सामना की जाने वाली जोखिमों के बारे में बताया गया है, जो कि किसी विशेष देश द्वारा आयातित वस्तुओं पर कर बढ़ाने की वजह से बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के मध्य व्यापार संघर्ष की बढ़ती जोखिम और अन्य देशों द्वारा विरोधात्मक उपायों के रूप में होगी। "विश्व की आर्थिक परिस्थिति और संभावनाएं", *अमेरिकी आर्थिक आंकलन और नीति विभाग,* अप्रैल 2018, ब्रीफिंग संख्या.113.
https://www.un.org/development/desa/dpad/publication/world-economic-situation-and-prospects-april-2018-briefing-no-113/ (मई 29, 2018 को एक्सेस किया गया).

[xvii]पश्चिमी सहयोगी शक्तियों ने वैश्विक आर्थिक प्रणाली का निर्माण किया

[xviii]"संरक्षणवाद की वापसी?" *म्यूनिख सुरक्षा सम्मेलन 2018 विडियो,* फरवरी 16, 2018. https://www.securityconference.de/en/media-library/munich-security-conference-2018/video/fireside-chat-the-return-of-protectionism/ (अप्रैल 16, 2018 को एक्सेस किया गया).

[xix]जर्मन विदेश मंत्री, सिग्मर गेब्रियल ने चीन की ओबीओआर पहल समेत इसकी बढ़ती ताकतों के बारे में कहा।

[xx]रोबर्ट बी ज़ोलिक (वर्ल्ड बैंक के पूर्व अध्यक्ष) ने "संरक्षणवाद की वापसी" पर पैनल चर्चा के दौरान चीन की प्रौद्योगिकी और अभिनव के मुद्दों की समस्याओं के बारे में कहा। उन्होंने कहा कि चीन को तरकीब अपनाता है या भविष्य में अपनाता रहेगा, उनमें उनकी काबिलियत को बदलने और सम्मिलित क्षेत्र के अनुसार आकार लेने की क्षमता है। "संरक्षणवाद की वापसी?" *म्यूनिख सुरक्षा सम्मेलन 2018 विडियो,* फरवरी 16, 2018. https://www.securityconference.de/en/media-library/munich-security-conference-2018/video/fireside-chat-the-return-of-protectionism/ (अप्रैल 16, 2018 को एक्सेस किया गया).

[xxi]"म्यूनिख सम्मेलन में कतर राज्य के अमीर शेख तमीम बिन हमद अल थानी का संबोधन", *कतर,* फरवरी 16-18, 2018.
https://www.securityconference.de/fileadmin/MSC_/2018/Hauptkonferenz/MSC2018_Reden/Speech_of_

HH_The_Amir_in_the_Munich_Security_Conference_English_Version.pdf (अप्रैल 3, 2018 को एक्सेस किया गया).

[xxii]"म्यूनिख सुरक्षा सम्मेलन के 54 वें संस्करण में एफएम ज़रीफ़ का पूरा भाषण", *विदेश मंत्रालय* फरवरी 18, 2018. http://en.mfa.ir/index.aspx?fkeyid=&siteid=3&pageid=2029&newsview=501055 (अप्रैल 4, 2018 को एक्सेस किया गया).

[xxiii]"जिहादवाद और खलीफत", *पाकिस्तान सीओएएस*, फरवरी 17, 2018. https://www.securityconference.de/fileadmin/MSC_/2018/Hauptkonferenz/MSC2018_Reden/MSC2018_speech_QamarJavedBajwa.pdf (अप्रैल 9, 2018 को एक्सेस किया गया).

[xxiv]"जिहादवाद और खलीफत", *पाकिस्तान सीओएएस*, फरवरी 17, 2018. https://www.securityconference.de/fileadmin/MSC_/2018/Hauptkonferenz/MSC2018_Reden/MSC2018_speech_QamarJavedBajwa.pdf (अप्रैल 9, 2018 को एक्सेस किया गया).

[xxv] ***एन्टोनियो गुटेरेस***, *"**म्यूनिख सुरक्षा सम्मेलन के आरंभिक सत्र में संबोधन**", **संयुक्त राष्ट्र**, **फरवरी** 18, 2018. https://www.un.org/sg/en/content/sg/speeches/2018-02-16/address-opening-ceremony-munich-security-conference (**फरवरी** 26, 2018 **को एक्सेस किया गया**).*

[xxvi]"**यूरोपीय**, **ट्रांसअटलांटिक बने हुए हैं**", **रक्षा संघ मंत्री** (**जर्मनी**), op.cit.

xxvii**मिशेल डक्लस**, "**म्यूनिख से पत्र – विश्व की सुरक्षा** "**खतरे में**"?" ***इंस्टिट्यूट मॉंटैग्न***, **फरवरी** 20, 2018. http://www.institutmontaigne.org/en/blog/letter-munich-worlds-security-brink (**मार्च** 15, 2018 **को एक्सेस किया गया**).

[xxviii]सुरक्षा नेटवर्किंग एक नॉन-जीरो-सम (अशून्य योगफल) पद्धति है जो गठबंधनों और खण्डों के विपरीत यह स्वीकार करता है कि सुरक्षा अविभाज्य है, जो दूसरों की असुरक्षा की कीमत पर सुरक्षा हासिल करने के दोषपूर्ण शून्य-योगफल पद्धति पर आधारित है।

[xxix]इस सामरिक पर फिर भी वाष्पशील जलमार्ग के आसपास के सभी देश संयुक्त राष्ट्र के घोषणा-पत्र में निहित सामान्य मानदंडों की एक श्रृंखला में प्रवेश करने में सक्षम होने चाहिए, जैसे कि राज्यों की संप्रभु समानता; बल उपयोग करने की धमकी देने या उपयोग करने से बचना; संघर्षों का शांतिपूर्ण समाधान; क्षेत्रीय अखंडता के लिए सम्मान; सीमाओं की अनुल्लंघनीयता; राज्यों के घरेलू मामलों में हस्तक्षेप ना करना; और राज्यों के अंतर्गत आत्मनिर्णय का सम्मान करना।

[xxx]"समापन संबोधन", *म्यूनिख सुरक्षा सम्मेलन*, फरवरी 18, 2018. https://www.securityconference.de/en/media-library/munich-security-conference-2018/video/closing-remarks-by-wolfgang-ischinger-2/ (अप्रैल 16, 2018 को एक्सेस किया गया).